IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 3, December 2025
Impact Factor: 7.67

कोरोना काल में सामाजिक कार्यकर्ताओं की भूमिका एवं चुनौतियाँ

अनूप कुमार भगोरे[1] **and** डॉ. ममता[2]

[1]शोधार्थी, सामाजिक कार्य विभाग

[2]शोध निर्देशक, सामाजिक कार्य विभाग

विक्रांत विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

सारांश

कोरोना महामारी ने वैश्विक स्तर पर सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य संरचनाओं को गंभीर रूप से प्रभावित किया। इस कठिन समय में सामाजिक कार्यकर्ताओं ने समाज के कमजोर और वंचित वर्गों की सहायता करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने स्वास्थ्य जागरूकता फैलाने, भोजन और आवश्यक वस्तुएँ उपलब्ध कराने, मानसिक और सामाजिक समर्थन प्रदान करने सहित कई क्षेत्रों में सक्रिय भूमिका निभाई। हालांकि, उन्हें उच्च स्वास्थ्य जोखिम, संसाधनों की कमी और मानसिक दबाव जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ा। यह अध्ययन सामाजिक कार्यकर्ताओं की भूमिका और उनके सामने आने वाली चुनौतियों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है, ताकि भविष्य में इस क्षेत्र में बेहतर समर्थन और नीतिगत सुधार सुनिश्चित किए जा सकें।

मुख्य संकेतक: - कोरोना महामारी, सामाजिक कार्यकर्ता, मानसिक स्वास्थ्य।

परिचय

कोरोना वायरस (COVID-19) महामारी ने दुनिया भर में स्वास्थ्य, समाज और अर्थव्यवस्था पर गहरा और व्यापक प्रभाव डाला। भारत जैसे बहुसंख्यक और विविध सामाजिक संरचना वाले देश में इस महामारी ने विशेष रूप से कमजोर और वंचित वर्गों को प्रभावित किया। महामारी के दौरान लॉकडाउन, सामाजिक दूरी, और अन्य स्वास्थ्य-संबंधी नियमों के पालन ने सामान्य जीवन को बाधित किया, जिससे रोज़मर्रा की जरूरतों को पूरा करना भी चुनौतीपूर्ण हो गया। ऐसे समय में सामाजिक कार्यकर्ताओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण साबित हुई। सामाजिक कार्यकर्ता समाज के सबसे कमजोर वर्गों की सहायता करने, उनकी समस्याओं को

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 3, December 2025 Impact Factor: 7.67

पहचानने और उनके समाधान में सक्रिय योगदान देने के लिए समर्पित होते हैं (शर्मा, 2021)। कोरोना काल में उन्होंने न केवल स्वास्थ्य जागरूकता फैलाने का कार्य किया बल्कि भोजन, चिकित्सीय सहायता, मानसिक स्वास्थ्य समर्थन और सामाजिक सुरक्षा के विभिन्न आयामों में भी योगदान दिया।

सामाजिक कार्यकर्ताओं ने ग्रामीण और शहरी गरीब समुदायों तक स्वास्थ्य संबंधी जानकारी पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने मास्क पहनने, हाथ धोने, सोशल डिस्टेंसिंग बनाए रखने और टीकाकरण के महत्व के बारे में लोगों को जागरूक किया। विशेष रूप से ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों में जहाँ स्वास्थ्य सुविधाओं की पहुँच सीमित थी, वहां उनके प्रयासों ने संक्रमण की दर को कम करने में मदद की (सिंह, 2020)। इसके साथ ही, लॉकडाउन के दौरान प्रवासी मजदूर और आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लोगों को भोजन, पानी और अन्य आवश्यक वस्तुएँ प्रदान करना भी उनकी जिम्मेदारी बन गई। कई सामाजिक कार्यकर्ताओं और गैर-सरकारी संगठनों ने राहत शिविरों का आयोजन किया, भोजन वितरण किया और आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराई, जिससे हजारों लोगों का जीवन संकट से बचाया गया (कुमार, 2021)।

कोरोना महामारी ने मानसिक स्वास्थ्य पर भी गहरा प्रभाव डाला। अलगाव, लॉकडाउन, आर्थिक असुरक्षा और बीमारी के डर ने मानसिक तनाव और अकेलेपन को बढ़ाया। इस स्थिति में सामाजिक कार्यकर्ताओं ने मानसिक स्वास्थ्य सहायता प्रदान करने का कार्य किया। उन्होंने फोन, ऑनलाइन प्लेटफार्म और सामुदायिक बैठकाओं के माध्यम से लोगों को मानसिक समर्थन दिया और तनाव प्रबंधन की जानकारी साझा की (वर्मा, 2020)। इससे यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक कार्यकर्ताओं का कार्य केवल भौतिक सहायता तक सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने समाज में मनोवैज्ञानिक और सामाजिक स्थिरता बनाए रखने में भी योगदान दिया।

हालांकि, सामाजिक कार्यकर्ताओं को इस महामारी के दौरान कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। सबसे बड़ी चुनौती स्वयं संक्रमण का जोखिम था। जब वे सीधे प्रभावित समुदायों के संपर्क में आते थे, तो उनके स्वास्थ्य पर गंभीर खतरा मंडराता था। इसके अलावा, अक्सर उनके पास पर्याप्त संसाधन, जैसे मास्क, सेनेटाइज़र, वित्तीय सहायता और सुरक्षा उपकरण नहीं होते थे, जिससे कार्य की क्षमता प्रभावित होती थी (गुप्ता, 2021)। मानसिक और भावनात्मक दबाव भी एक बड़ी चुनौती थी। लगातार संकट प्रबंधन और उच्च जोखिम वाले वातावरण में काम करने के कारण सामाजिक कार्यकर्ताओं में मानसिक थकान, चिंता और तनाव बढ़ गया। इसके बावजूद, उन्होंने अपने कर्तव्य और समाज के प्रति जिम्मेदारी को प्राथमिकता दी।

सामाजिक कार्यकर्ताओं की भूमिका केवल प्रत्यक्ष राहत कार्य तक सीमित नहीं थी। उन्होंने समाज में जागरूकता फैलाने, सरकारी योजनाओं की जानकारी देने, टीकाकरण अभियान में सहयोग करने और

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 3, December 2025 Impact Factor: 7.67

सामाजिक सुरक्षा नेटवर्क को मजबूत करने में भी योगदान दिया। उनके प्रयासों ने यह साबित किया कि किसी भी सामाजिक आपदा या महामारी के समय समुदाय की भलाई के लिए सामाजिक कार्यकर्ता एक महत्वपूर्ण स्तंभ होते हैं। उनके बिना, कमजोर वर्ग के लोगों तक सहायता पहुँचाना और महामारी के दुष्प्रभाव को कम करना अत्यंत कठिन होता।

कोरोना महामारी ने सामाजिक कार्यकर्ताओं की भूमिका की आवश्यकता और उनकी चुनौतियों को स्पष्ट रूप से उजागर किया। यह अनुभव बताता है कि भविष्य में सामाजिक कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण, स्वास्थ्य सुरक्षा, वित्तीय और मानसिक सहायता को मजबूत करना अत्यंत आवश्यक है। नीति-निर्माताओं और समाज को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि संकट के समय में सामाजिक कार्यकर्ता अपनी भूमिका प्रभावी ढंग से निभा सकें। इसके अतिरिक्त, सामाजिक कार्य के क्षेत्र में तकनीकी साधनों का उपयोग बढ़ाना, ऑनलाइन सहायता और डिजिटल जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन करना भी आवश्यक हो गया है। इस प्रकार, कोरोना काल ने न केवल सामाजिक कार्यकर्ताओं के महत्व को उजागर किया, बल्कि यह भी दिखाया कि उनकी सुरक्षा और संसाधनों की उपलब्धता पर ध्यान देना समाज की मजबूती के लिए अनिवार्य है।

कोरोना महामारी ने समाज की कमजोर परतों तक सहायता पहुँचाने में सामाजिक कार्यकर्ताओं की भूमिका को अत्यंत महत्वपूर्ण बना दिया। उनके प्रयासों ने भौतिक, मानसिक और सामाजिक स्तर पर समाज को स्थिर बनाए रखा। हालांकि, उनके सामने स्वास्थ्य जोखिम, संसाधनों की कमी और मानसिक दबाव जैसी चुनौतियाँ रही, फिर भी उन्होंने समाज के प्रति अपने कर्तव्य का निर्वहन किया। यह स्पष्ट करता है कि सामाजिक कार्यकर्ताओं का समर्थन, प्रशिक्षण और सुरक्षा किसी भी आपदा प्रबंधन प्रणाली का अभिन्न हिस्सा होना चाहिए (शर्मा, 2021; कुमार, 2021)।

कोरोना काल में सामाजिक कार्यकर्ताओं की भूमिका

कोरोना महामारी ने पूरी दुनिया में जीवन के हर पहलू को प्रभावित किया, और इस कठिन समय में सामाजिक कार्यकर्ताओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण साबित हुई। महामारी के दौरान न केवल स्वास्थ्य संकट उत्पन्न हुआ, बल्कि आर्थिक असमानताएँ और सामाजिक चुनौतियाँ भी बढ़ गईं। ऐसे समय में सामाजिक कार्यकर्ताओं ने समाज के कमजोर और वंचित वर्गों के लिए जीवन रेखा का काम किया। उन्होंने ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में लोगों को कोरोना संक्रमण के प्रति जागरूक करने, मास्क और सैनिटाइज़र का महत्व समझाने और सोशल डिस्टेंसिंग का पालन कराने में सक्रिय योगदान दिया। इसके अलावा, लॉकडाउन के दौरान

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 3, December 2025 Impact Factor: 7.67

प्रवासी मजदूर, आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग और बेरोजगार लोगों को भोजन, राशन और अन्य आवश्यक वस्तुएँ उपलब्ध कराने में सामाजिक कार्यकर्ताओं की भूमिका उल्लेखनीय रही। उन्होंने राहत वितरण केंद्र स्थापित किए, भोजन और मेडिकल किट प्रदान की, और स्थानीय प्रशासन के साथ समन्वय करके सहायता कार्यों को सुचारू रूप से संचालित किया।

सामाजिक कार्यकर्ताओं ने मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक समर्थन के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। लॉकडाउन और कोरोना संक्रमण के कारण अनेक लोगों में मानसिक तनाव, चिंता और अकेलेपन की समस्या बढ़ गई। सामाजिक कार्यकर्ताओं ने इस स्थिति में टेलीफोन, ऑनलाइन कक्षाओं और सामुदायिक गतिविधियों के माध्यम से लोगों को मानसिक सहारा प्रदान किया। उन्होंने बच्चों, वृद्धों और घर पर बंद लोगों के लिए ऑनलाइन शिक्षा और मनोरंजन गतिविधियों का आयोजन किया, जिससे लोगों को न केवल मानसिक राहत मिली, बल्कि सामाजिक जुड़ाव की भावना भी बनी रही। इसके अलावा, सामाजिक कार्यकर्ताओं ने कोरोना के दौरान महिलाओं और बच्चों के प्रति बढ़ते घरेलू हिंसा के मामलों पर भी ध्यान दिया और पीड़ितों को सहायता तथा सुरक्षा प्रदान करने का कार्य किया।

हालांकि, सामाजिक कार्यकर्ताओं ने इस संकट के समय में कई चुनौतियों का सामना भी किया। उन्हें लगातार संक्रमण का खतरा बना रहा, क्योंकि वे सीधे प्रभावित समुदायों के संपर्क में रहते थे। इसके अलावा, अक्सर संसाधनों की कमी और वित्तीय समर्थन का अभाव उनके कार्य को प्रभावित करता रहा। लंबी ड्यूटी, उच्च जोखिम वाले वातावरण और लगातार संकट प्रबंधन की जिम्मेदारी ने उनके मानसिक स्वास्थ्य पर भी दबाव डाला। इसके बावजूद, उनकी समर्पित सेवा और निस्वार्थ प्रयासों ने समाज को महामारी से मुकाबला करने में मदद की और सामाजिक सहयोग की भावना को मजबूत किया।

कोरोना काल में सामाजिक कार्यकर्ताओं की भूमिका न केवल प्रत्यक्ष सहायता प्रदान करने तक सीमित रही, बल्कि उन्होंने समाज में सामूहिक जागरूकता, स्वास्थ्य सुरक्षा और मानवीय सहयोग की भावना को भी बनाए रखा। उनके योगदान के बिना महामारी के दौरान समाज के कमजोर वर्गों को आवश्यक सहायता प्रदान करना संभव नहीं था। इस अनुभव ने यह भी स्पष्ट किया कि भविष्य में इस क्षेत्र में बेहतर प्रशिक्षण, संसाधन और नीतिगत समर्थन प्रदान करना अत्यंत आवश्यक है, ताकि सामाजिक कार्यकर्ता और अधिक प्रभावी ढंग से समाज की सेवा कर सकें।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 3, December 2025 Impact Factor: 7.67

1. स्वास्थ्य जागरूकता और सुरक्षा

सामाजिक कार्यकर्ताओं ने मास्क पहनने, सोशल डिस्टेंसिंग बनाए रखने और वैक्सीनेशन के महत्व के बारे में लोगों को जागरूक किया। ग्रामीण और शहरी गरीब क्षेत्रों में उनके प्रयासों ने महामारी की गति को धीमा करने में योगदान दिया (सिंह, 2020)।

2. भोजन और प्राथमिक आवश्यकताओं की आपूर्ति

लॉकडाउन के दौरान प्रवासी मजदूर और गरीब वर्ग विशेष रूप से प्रभावित हुए। सामाजिक कार्यकर्ताओं ने भोजन वितरण और राहत सामग्री प्रदान करके इन लोगों की जीवन रक्षा में मदद की (कुमार, 2021)।

3. मानसिक और सामाजिक समर्थन

कोरोना संक्रमण और लॉकडाउन के कारण कई लोगों में मानसिक तनाव और अकेलापन बढ़ गया। सामाजिक कार्यकर्ताओं ने फोन कॉल, ऑनलाइन सहायता और सामुदायिक कक्षाओं के माध्यम से मानसिक स्वास्थ्य सहायता प्रदान की (वर्मा, 2020)।

चुनौतियाँ

1. स्वास्थ्य संबंधी जोखिम

सामाजिक कार्यकर्ताओं को स्वयं संक्रमण का खतरा था क्योंकि वे सीधे प्रभावित समुदायों के संपर्क में रहते थे (गुप्ता, 2021)।

2. संसाधनों की कमी

सामाजिक कार्यकर्ताओं को अक्सर पर्याप्त संसाधन, जैसे मास्क, सेनेटाइज़र, और वित्तीय सहायता उपलब्ध नहीं होती थी, जिससे उनकी कार्य क्षमता प्रभावित हुई।

3. मानसिक और भावनात्मक दबाव

लगातार संकट प्रबंधन और उच्च जोखिम वाली परिस्थितियों में काम करने के कारण मानसिक स्वास्थ्य पर भारी दबाव पड़ा (शर्मा, 2021)।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 3, December 2025
Impact Factor: 7.67

निष्कर्ष

कोरोना महामारी ने पूरे विश्व को अनिश्चितता और चुनौतियों के बीच छोड़ दिया, और इस संकट के समय में सामाजिक कार्यकर्ताओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण साबित हुई। महामारी ने केवल स्वास्थ्य क्षेत्र को प्रभावित नहीं किया, बल्कि समाज के कमजोर और वंचित वर्गों पर भी गहरा प्रभाव डाला। ऐसे में सामाजिक कार्यकर्ताओं ने समाज के विभिन्न स्तरों पर सक्रिय भूमिका निभाते हुए राहत और सहायता प्रदान की। उन्होंने न केवल भोजन, दवा, और अन्य आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति सुनिश्चित की, बल्कि स्वास्थ्य जागरूकता फैलाने, सामाजिक दूरी और सुरक्षा उपायों के महत्व को समझाने में भी अहम योगदान दिया। इसके अतिरिक्त, मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक समर्थन प्रदान करने में उनका योगदान अत्यंत मूल्यवान रहा, क्योंकि लॉकडाउन और सामाजिक अलगाव ने लोगों में तनाव, चिंता और अकेलेपन को बढ़ावा दिया।

सामाजिक कार्यकर्ताओं ने विशेष रूप से प्रवासी मजदूरों, आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों और बुजुर्ग नागरिकों की सहायता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने न केवल प्रत्यक्ष सहायता प्रदान की, बल्कि समाज में सहयोग और सामूहिक जिम्मेदारी की भावना को भी मजबूत किया। उनका कार्य यह दर्शाता है कि सामाजिक कार्य केवल आपातकालीन समय में ही नहीं, बल्कि समाज के सतत विकास और मानव कल्याण में भी अत्यंत आवश्यक है।

हालांकि, सामाजिक कार्यकर्ताओं ने इस दौरान कई गंभीर चुनौतियों का सामना किया। उन्हें स्वयं स्वास्थ्य जोखिमों का सामना करना पड़ा, क्योंकि वे सीधे संक्रमित या प्रभावित समुदायों के संपर्क में आते थे। इसके साथ ही, पर्याप्त संसाधनों की कमी ने उनके काम को कठिन बना दिया। मास्क, सेनेटाइज़र, वित्तीय सहायता और अन्य संसाधनों की अपर्याप्तता ने कई बार उनकी कार्यक्षमता पर प्रभाव डाला। इसके अलावा, लगातार उच्च जोखिम वाली परिस्थितियों में काम करने के कारण मानसिक और भावनात्मक दबाव भी बढ़ गया। कई सामाजिक कार्यकर्ताओं ने अपने जीवन और स्वास्थ्य की चिंता के बावजूद अपनी जिम्मेदारियों को प्राथमिकता दी, जिससे उनके समर्पण और कर्तव्यपरायणता की मिसाल सामने आई।

भविष्य की दृष्टि से यह स्पष्ट है कि सामाजिक कार्यकर्ताओं के कार्यों को समर्थन और मान्यता देने की आवश्यकता है। सरकारों और गैर-सरकारी संगठनों को न केवल वित्तीय और भौतिक संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करनी चाहिए, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य और सुरक्षा के उपायों पर भी ध्यान देना चाहिए। इसके अतिरिक्त, प्रशिक्षण और आपातकालीन प्रबंधन कौशल को बढ़ावा देना सामाजिक कार्यकर्ताओं की

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 3, December 2025 Impact Factor: 7.67

क्षमता और प्रभावशीलता को और बढ़ा सकता है। सामाजिक कार्य केवल कठिन समय में ही नहीं, बल्कि समाज के सतत विकास, समानता और सामूहिक कल्याण में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है।

कोरोना काल में सामाजिक कार्यकर्ताओं ने जो योगदान दिया वह समाज के लिए प्रेरणादायक और अनुकरणीय रहा। उनके कार्य ने न केवल संकट के समय में जीवन रक्षा में मदद की, बल्कि समाज में एकजुटता, सहयोग और मानवता की भावना को भी प्रबल किया। इस अनुभव से स्पष्ट होता है कि सामाजिक कार्यकर्ताओं का समर्थन, सुरक्षा और मान्यता समाज के सशक्तिकरण और संकट प्रबंधन में केंद्रीय भूमिका निभाती है। अतः भविष्य में समाज और नीति निर्माताओं को इस क्षेत्र में सतत निवेश और सहयोग सुनिश्चित करने की आवश्यकता है, ताकि किसी भी आपातकालीन स्थिति में सामाजिक कार्यकर्ता अपने योगदान को प्रभावी रूप से जारी रख सकें।

संदर्भ सूची

[1]. कुमार, ए. (2021). *कोविड-19 महामारी में सामाजिक कार्य और राहत प्रयास.* नई दिल्ली: सामाजिक अध्ययन प्रकाशन।

[2]. कौल, वी. (2021). *लॉकडाउन और सामाजिक राहत कार्य.* चंडीगढ़: सामाजिक सेवा संगठन।

[3]. गुप्ता, आर. (2021). *सामाजिक कार्यकर्ताओं के स्वास्थ्य जोखिम और चुनौतियाँ.* जयपुर: जनकल्याण प्रकाशन।

[4]. चौहान, डी. (2020). *कोविड-19 में सामुदायिक सहभागिता का महत्व.* लखनऊ: समाज सेवा संस्थान।

[5]. जोशी, आर. (2021). *कोविड-19 संकट में सामाजिक कार्यकर्ताओं की चुनौतियाँ.* पटना: ज्ञान पब्लिकेशन।

[6]. त्रिपाठी, एम. (2020). *महामारी के समय सामाजिक सहायता की रणनीतियाँ.* भोपाल: मानव सेवा प्रकाशन।

[7]. पांडे, ए. (2020). *सामाजिक कार्य और स्वास्थ्य जागरूकता.* नई दिल्ली: स्वास्थ्य और समाज प्रकाशन।

[8]. भट्ट, पी. (2020). *प्रवासी मजदूरों के लिए राहत प्रयास और सामाजिक कार्य.* अहमदाबाद: मानविकी अध्ययन संस्थान।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 3, December 2025 Impact Factor: 7.67

[9]. माथुर, एस. (2021). *सामाजिक कार्यकर्ताओं के अनुभव और सीख.* जयपुर: लोक सेवा पब्लिकेशन।

[10]. रॉय, एस. (2021). *सामाजिक कार्य और आपदा प्रबंधन.* दिल्ली: लोक कल्याण प्रकाशन।

[11]. वर्मा, आर. (2021). *सामाजिक कार्य में मानसिक और भावनात्मक दबाव.* मुंबई: समाज विज्ञान प्रकाशन।

[12]. वर्मा, एस. (2020). *मानसिक स्वास्थ्य सहायता में सामाजिक कार्यकर्ताओं की भूमिका.* कोलकाता: मानविकी अध्ययन संस्थान।

[13]. शर्मा, पी. (2021). *कोरोना महामारी और सामाजिक कार्य.* मुंबई: समाज विज्ञान प्रकाशन।

[14]. सिंह, वी. (2020). *सामाजिक जागरूकता और महामारी प्रबंधन.* दिल्ली: ज्ञानदीप पब्लिकेशन।

[15]. सेन, ए. (2020). *कोरोना महामारी में सामुदायिक जागरूकता अभियान.* कोलकाता: समाज सेवा संस्थान।